पाठ 11

DLB2Q5

उत्तर भारत (सातवीं से ग्यारहवीं शताब्दी)

प्राचीन भारतीय समाज जो धीरे-धीरे मध्यकालीन समाज में बदला इसका मुख्य कारण था भूमि अनुदान की प्रथा। वेतन और पारिश्रमिक की जगह, बड़े पैमाने पर भूमि का अनुदान मिलने लगा था। इसमें राजा को यह सुविधा थी कि करों की वसूली करने और शांति व्यवस्था बनाए रखने का भार अनुदान प्राप्त करने वालों के ऊपर चला जाता था, परन्तु इससे राजा की शक्ति बहुत ही घटने लगी। ऐसे-ऐसे क्षेत्र बन गए जो राजकीय नियंत्रण से परे थे। इन सबके फलस्वरूप राजा के प्रभुत्व क्षेत्र को हड़पते हुए भूस्वामी उदित हुए। यह अपने को राजपूत कहते थे।

राजपूत

राजपूत संस्कृत शब्द ‘राजपुत्र’ का बिगड़ा हुआ रूप है। यह शब्द राजकुमार या राजवंश का सूचक था। धीरे-धीरे क्षत्रिय वर्ग राजपूत नाम से प्रसिद्ध हो गया।

राजपूत कालीन समाज

शासन व्यवस्था

इस समय से सामन्ती व्यवस्था की शुरुआत होने लगी जिसमें सामन्त राजा प्रत्येक वर्ष एक निश्चित आय अधिपति को देते थे।

गाँवों में ग्राम पंचायतें होती थीं। उन ग्राम पंचायतों पर शासन का कोई हस्तक्षेप नहीं था। मौर्यों के समय में उत्पन्न हुई पंचायती राज व्यवस्था अभी भी कायम थी। इस प्रकार राजनीतिक उथल-पुथल का गाँवों पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ता था।

सामाजिक व्यवस्था

राजपूत काल में समाज में योद्धा तथा शासक वर्ग मुख्य थे। राजपूतों में साहस, आत्मसम्मान तथा आतिथ्य का भाव था। प्राण जाए पर वचन न जाए जैसे आन/शान की सोच विकसित हुई और उनकी गुण-गाथाएँ भी गाई जाने लगीं।

ब्राह्मणों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। धनी लोग कीमती वस्त्र और आभूषण पहना करते थे। जन साधारण की वेश-भूषा साधारण थी। बाल विवाह तथा सती प्रथा का प्रचलन हो गया था। विधवा विवाह वर्जित था। महिलाओं को सामान्य अधिकार प्राप्त थे।

इस समय वर्ण व्यवस्था कठोर हो गई थी। जिसके कारण लोगों की मानसिक सोच संकुचित हो चुकी थी।

राजपूतकालीन उत्तर भारत के कुछ राज्य

कला

राजपूत शासक लड़ाई में व्यस्त रहने के साथ ही कला एवं साहित्य में भी रुचि रखते थे, इन्होंने प्रतिष्ठा सूचक भव्य दुर्ग, राजभवन तथा मन्दिरों का निर्माण करवाया जिनको देखने के लिए आज भी हजारों विदेशी पर्यटक आते हैं।

भुवनेश्वर का लिंगराज मन्दिर

उत्तरी भारत के राजाओं ने कई भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाया। जैसे - भुवनेश्वर का लिंगराज मन्दिर।

चन्देल राजाओं ने शिव, विष्णु तथा जैन तीर्थंकरों को समर्पित कई मन्दिर बनवाए जिसमें खजुराहो का कन्दरिया महादेव मन्दिर अपनी बनावट के लिए अति प्रसिद्ध है। ये सभी मन्दिर पीले रंग के बलुआ पत्थरों के बने हैं। इन मन्दिरों में आज भी सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं।

कोणार्क का सूर्य मन्दिर

कोणार्क का सूर्य मन्दिर गंग वंश के नरसिम्हा प्रथम के द्वारा बनवाया गया। यह मन्दिर एक रथ के आकार का है जिसमें बारह पहिए हैं तथा सात घोड़े इस रथ को खींचते हुए दर्शाए गए हैं।

खजुराहो में भरतनाट्यम नृत्य करती नर्तकी

मन्दिरों का व्यय चलाने के लिए उच्च वर्ग के लोग सोना, चाँदी, कीमती पत्थर, मोती इत्यादि दान में देते थे। इन मन्दिरों की विशेषता यह थी कि ये धन-धान्य से परिपूर्ण थे जो भारत में विदेशी आक्रमणों का मुख्य कारण भी बना।

शिक्षा एवं साहित्य

राजपूत शासकों के समय में आश्रमों, पाठशालाओं एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा दी जाती थी। इस समय नालन्दा, विक्रमशिला, उज्जयिनी, कन्नौज, काशी, धारानगरी प्रमुख शिक्षा केन्द्र थे।

इसी काल में नाटक, काव्य एवं ग्रन्थ लिखे गए जैसे- राजशेखर की बाल रामायण, भारवि का किरातार्जुनीय, माघ का शिशुपाल वध (नाटक), कल्हण की राजतरंगिणी (ऐतिहासिक ग्रन्थ), जयदेव का गीत गोविन्द (काव्य) संस्कृत भाषा में लिखे गए। इसी काल में क्षेत्रीय भाषाओं जैसे- हिन्दी, बंगाली, मराठी, उड़िया, गुजराती आदि में भी ग्रन्थ लिखे गए। उदाहरणतः चन्दबरदाई की पृथ्वीराज रासो का वीर गाथा काव्य हिन्दी में लिखा गया है।

भवन निर्माण

मोटे तौर पर भवन निर्माण की दो शैलियाँ थीं - उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय। इनमें भेद मुख्यतः मन्दिर के शिखर के आकार में देखा जाता है। उत्तर भारतीय शिखरों का आकार टेढ़ी रेखाओं से घिरी हुई ठोस मीनार की भाँति रहता था। मध्य में खुला हुआ तथा ऊपर एक बिन्दु पर आकर समाप्त हो जाता था। उदाहरणतः लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर।

उत्तर भारतीय

दक्षिण भारतीय शिखर पिरामिड की तरह दिखते थे जिसमें कई खण्ड होते थे। प्रत्येक खण्ड क्रमशः ऊपर की ओर अपने नीचे वाले खण्ड से छोटा होता जाता था, और सबसे ऊपर जाकर छोटे तथा गोलाकार टुकड़े में हो जाता था। दक्षिण भारत के मन्दिरों में स्तम्भों का मुख्य स्थान है जबकि उत्तर भारत के मन्दिरों में इनका सर्वथा अभाव दिखाई देता है।

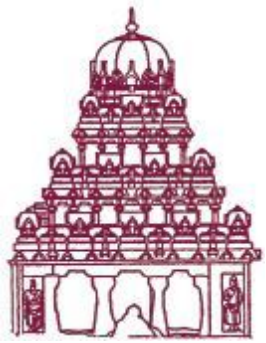

दक्षिण भारतीय मन्दिर

मन्दिरों को बनाने के लिए कारीगर पत्थर को जमाने के लिए चूने व गारे का घोल इस्तेमाल नहीं करते थे। इस विधि के बगैर ही वे बड़े-बड़े पत्थरों को एक के ऊपर एक चढ़ाते जाते थे जिससे वे वर्षों तक टिके रहें। ये पत्थर एक-दूसरे के भार से ही सैकड़ों साल तक टिके रहे हैं।

और भी जानिए

बंगाल का पाल वंश - इस वंश का संस्थापक 'गोपाल' था। इसने बंगाल की सीमा को बढ़ाया। देवपाल, धर्मपाल आदि इस वंश के अन्य शासक थे। पालों के शासन काल में जनता सुखी थी। साहित्य एवं कला का विकास हुआ।

बंगाल का सेन वंश - सामन्त सेन ने 'सेन वंश' की स्थापना की। बल्लाल सेन, लक्ष्मण सेन इस वंश के अन्य प्रमुख शासक थे। सेन शासनकाल में संस्कृत साहित्य का अधिक विकास हुआ। इसी काल में जयदेव ने प्रसिद्ध 'गीत गोविन्द' की रचना की।

अभ्यास

1. खजुराहो के मन्दिर किस वंश के शासकों ने बनवाए थे ?

2. नरसिम्हा प्रथम ने कौन सा मन्दिर बनवाया था ?

3. चंद्रावार का युद्ध किनके बीच लड़ा गया ?

4. राजपूत काल में शिक्षा के मुख्य केन्द्र कौन-कौन से थे ?

5. उत्तर भारत में राजपूतों के राजनैतिक महत्व का उल्लेख कीजिए।

6. राजपूत कालीन सामाजिक व्यवस्था का वर्णन करें।

7. भवन निर्माण की उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय शैली के बारे में लिखिए।

8. निम्नलिखित रचनाओं के लेखकों के नाम लिखिए।

पुस्तकों के नाम लेखकों के नाम

(क) किरातार्जुनीयम .....

(ख) शिशुपाल वध .....

(ग) राजतरंगिणी .....

(घ) बालरामायण .....

(ङ) गीत-गोविन्द .....

गतिविधि

मानचित्र को देखकर निम्नलिखित को पूरा करिए-

निम्न वंश वर्तमान में किस राज्य में स्थित हैं-

वंशों के नाम वर्तमान में किस राज्य में

चैहान (चाहमान)

प्रतिहार

गहड़वाल

परमार

पाल

चंदेल

प्रोजेक्ट वर्क

उत्तर भारतीय मन्दिर तथा दक्षिण भारतीय मन्दिर का रेखाचित्र बनाएँ तथा उनके मध्य के अन्तर को सूचीबद्ध करें।